अध्याय 14

एक मसीही एवं स्वयं

छोटे से देश में आंतरिक युद्ध चल रहा था और छापामार सैनिक सभी जगह युद्ध कर रहे थे। एक जवान व्यक्ति उनके द्वारा पकड़ लिया गया एवं उसकी जान लेने की धमकी दी गई यदि वह मसीहियत को नहीं छोड़ता।

कुछ ही क्षणों तक साहस दिखाने के पश्चात् उसने आत्म-समर्पण करके विश्वास का परित्याग कर दिया। उसके बाद उस पर दबाव डाल कर उसे छापामार सैनिकों में शामिल कर लिया और उससे आशा की गई कि वह उनके लिए काम करे। वह उनका अगुआ बन कर उन खूनी लोगों को उन मसीहियों के घरों में ले गया जिन्हें वह जानता था।

महीने बीत गये। तब एक दिन वह भयानक युद्ध में फंस गया। और उसके ही लोगों में से एक ने उसे मार डाला। कितना नुकसान — इस जीवन में और आने वाले जीवन दोनों में।

कितना अच्छा होता यदि वह अपने विश्वास में अडिग रहता। वह अपने जीवन को जरूर खो देता किन्तु उसे अनन्त जीवन प्राप्त हो जाता। वह परमेश्वर एवं दूसरों के प्रति अपनी जिम्मेवारी निभाने में असफल रहा। वह स्वयं के प्रति भी अपनी जिम्मेवारी निभाने में असफल रहा।

यह पाठ हमें इस बात को समझने में हमारी सहायता करेगा कि हम अपने आप से किस बात के ऋणी हैं और परमेश्वर की आज्ञा का पालन कैसे

कर सकते हैं जो चाहता है कि हमारा जीवन समय एवं अनन्त काल के प्रति ईमानदार हो।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

अपने आप का इन्कार करना
अपने को शुद्ध करना

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप...

- महसूस करें कि आपकी सबसे बड़ी लाभ-प्राप्ति अपने आप का इन्कार करने में ही है।
- वर्णन कर सकें कि प्रत्येक मसीही के लिए एक स्वच्छ एवं शुद्ध विवेक और शरीर की आवश्यकता क्यों है?

अपने आप का इन्कार करना

उद्देश्य १. यह जानना कि "अपने आप का इन्कार" करने का क्या अर्थ है।

एक मसीही विश्वासी का जीवन उसका अपना नहीं है। एक मसीही के जीवन का स्वामी प्रभु है क्योंकि उसने अपने स्वयं लोहू से इसे खरीदा है।

आपको मालूम है कि आपके छुटकारे के लिए कौन सा धन चुकाया गया है ..... यह वह चीज नहीं थी जो नाशमान हो जैसे चांदी और सोना। यह मसीह का बहुमूल्य बलिदान था जो निष्कलंक मेम्ने के समान था. (१ पतरस १:१८-१९)।

पहला कुरिन्थियों ६:२० भी हमें यीशु के क्रूस पर बलिदान देने के विषय में बताता है "उसने तुमको दाम देकर मोल लिया।" यदि मसीह ने हमारे लिए एक कीमत चुकाई तो हमें भी अवश्य एक कीमत चुकानी है। बाइबल बताती है कि एक मसीही बनने का अर्थ अपने आपको भूलकर यीशु के पीछे चलना है। लूका ९:२३ में प्रभु के ये वचन है : "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।"

जब हम परमेश्वर की इच्छानुसार काम करते हैं तो अपने आप को भूल जाते हैं और अपनी इच्छानुसार नहीं चलते। यीशु मसीह ने हमारे सामने एक अच्छा नमूना पेश किया है। यूहन्ना ६:३८ में उसके वचन ये हैं "क्योंकि मैं स्वर्ग से नीचे उतरा हूँ ताकि अपनी इच्छा नहीं किन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करूं।"

जो मुझे "हे प्रभु, हे प्रभु' कहते हैं उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है (मत्ती ७:२१)।

मसीहियों के रूप में हमें प्रतिदिन सही कार्य करने का चुनाव करना है भले ही वह हमारी आकांक्षाओं के विरुद्ध हों "वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो" (रोमियों १३:१४)।

क्या अपने आप का इन्कार करना आपको ऋणात्मक मालूम पड़ता है? मैं नहीं सोचता क्योंकि प्रभु कोई अच्छी चीज दिये बगैर हमसे कोई भी चीज नहीं मांगता। यह एक कुत्ता और हड्डी की कहानी के समान है। जब उसके मालिक ने उससे हड्डी लेने की कोशिश की तो वह गुस्से में आकर गुर्राने लगा। कुत्ते के पास हड्डी ही बाकी थी इसलिए वह इसे नहीं देना चाहता था। किन्तु जब उसके मालिक ने मांस का एक बड़ा टुकड़ा नीचे रख दिया तो कुत्ते ने हड्डी तुरन्त छोड़ दी।

कभी-कभी हम "हड्डियों" में ही अधिक रुचि रखते हैं — सोचते हैं कि हमें इसकी ही जरूरत है। हमें यह मालूम करना चाहिए कि प्रभु हमें कोई अच्छी चीज भेंट कर रहा है। जब चेले इस बात से कुछ चिंतित थे कि उन्हें क्या कुछ छोड़ना पड़ेगा। यीशु ने उन्हें यह स्पष्ट उत्तर दिया :

> और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या लड़के वालों या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है उसको सौ गुना मिलेगा और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा (मत्ती १९:२९)। दूसरी जगह यीशु ने कहा कि वह आया "ताकि तुम जीवन पाओ और बहुतायत से प्राप्त करो" (यूहन्ना १०:१०)।
>
> जीवन इसकी पूरी भरपूरी के साथ! यही जिसे सारा संसार ढूंढ रहा है किन्तु केवल परमेश्वर ही दे सकता है।

हां, काश! आप इस प्रेम को जान सकते — यद्यपि इसे पूरी तरह नहीं जाना जा सकता और उसके स्वभाव में पूरी तरह से परिपूर्ण हो जाओ। वह जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है। उस सामर्थ के अनुसार जो हममें कार्य करता है, कलीसिया

में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन! (इफिसियों ३:१९-२१)

जो आपको करना है

१. लूका १४:२७ पढ़ें।

अ. इस पद में अपने आप का इन्कार करने की तुलना..... उठाकर चलने से की गई है।

ब. इस पद के अनुसार हमें परमेश्वर से ..... से अधिक प्रेम रखना चाहिए।

२. स्वयं का इन्कार करना या क्रूस उठाकर चलने का अर्थ है :

अ. धन-संपत्ति न रखना।

ब. जो कुछ हमारे पास है उसे बेच कर कलीसिया को दे देना।

स. अपनी इच्छा से बढ़कर परमेश्वर की इच्छा पूरी करना।

३. नीचे दिए गए कौन-कौन से कथन सही है?

अ. यीशु ने अपने प्राण हमारे लिए दे दिए इसलिए नहीं कि हमारे ऊपर भार बढ़ जाए किन्तु इसलिए कि हम अपने दोष से मुक्त हो सकें।

ब. जीवन की भरपूरी परमेश्वर के स्वभाव से पूरी तरह परिपूर्ण होने पर ही प्राप्त होती है।

स. स्वयं का इंकार करने का अर्थ अपने पापी स्वभाव पर ध्यान न लगाना है।

४. मत्ती ११:२८-३० पढ़ें। यीशु का क्रूस उठाना भार नहीं, किन्तु उसके विरुद्ध, यह .... है।

अपने को शुद्ध करना

उद्देश्य २. देह और विवेक को शुद्ध रखने के विषय में उपयुक्त मसीही व्यवहार का चुनाव करना।

एक मसीही को अपनी देह और विवेक को शुद्ध रखना चाहिए। बाइबल बताती है कि हमें ऐसा क्यों करना चाहिए।

> क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है और तुम अपने नहीं हो? (१) कुरिन्थियों ६:१९)

धूम्रपान या नशा करना एक व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, यह उसकी देह और विवेक को नुकसान पहुंचाकर जीवन काल को कम कर देता है। इसका उपयोग करने वाला सोच सकता है कि इसे जब चाहे तब छोड़ सकता है — किन्तु यह सच नहीं — वह अपनी इस आदत का गुलाम बन जाता है।

क्या तुम नहीं जानते कि जिसकी आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आपको दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो। और जिसकी मानते

हो, चाहे पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के जिसका अन्त धार्मिकता है (रोमियों ६:१६)।

शायद आप कुछ परीक्षाओं में फँस गए हों। क्या आप ऐसी जगहों में जाते हैं जिनसे प्रभु प्रसन्न नहीं, या ऐसी पुस्तकें या पत्रिकाएं पढ़ते हैं जिनसे प्रभु के देखते आप शर्मिंदा हों? परमेश्वर से सहायता मांग कर हम हानिप्रद आदतों से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रभु से कहें कि आप अपने बल पर बुराई पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते और वह आपकी सहायता करेगा। अपने जीवन में उससे चंगाई की मांग करें। इस पद को सीख कर जब कभी आप परीक्षा में पड़ जाएं तो इसे दुहराएं "जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं" (फिलिप्पियों ४:१३)।

> अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़ और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा। वह तेरा धर्म ज्योति की नाईं और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले की नाईं प्रगट करेगा (भजन संहिता ३७:५)।

जो आपको करना है

५. नीचे दी गई परिस्थितियों में आप क्या करेंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर हां या नहीं में दीजिए।

...अ. आप अपने मित्र की पार्टी (जो अविश्वासी है) में निमंत्रित हैं जहां आपको उस कार्यक्रम में भाग लेना है जो आपके मसीही विश्वास के विरुद्ध है। क्या आप कम से कम एक बार वहां जाएंगे ताकि आप के मित्र को दुख न हो?

...ब. आपकी कलीसिया के कई सदस्यों ने आप से उस जगह जाने को कहा है जहां आप को वह करना होगा जिससे प्रभु प्रसन्न नहीं। क्या आप इसे स्वीकार करेंगे ताकि वह ऐसा महसूस न करें कि आप अपने को उनसे अधिक पवित्र दिखाने की कोशिश कर रहे हैं।

...स. बहुत से अविश्वासियों ने आपको अपने त्योहारों में अपने घरों में बुलाया और आपके जीवन परिवर्तन की गवाही सुनाने को कहा है। क्या आप जाएंगे क्यों कि यह गवाही देने का एक अवसर है।

६. एक नया मसीही आपके आगे यह मान लेता है कि वह धूम्रपान नहीं छोड़ सकता। आप निम्नलिखित में से कौन सा काम करेंगे।

अ. उसे बताएं कि जब तक धूम्रपान न छोड़ दे वह स्वर्ग नहीं जा सकता।

ब. पास्टर से ऐसा कह दें ताकि उस नए मसीही को बपतिस्मा न दिया जाए।

स. उसके साथ प्रार्थना करें और प्रभु के पास जाएं तथा उसके वचन में से बताएं ताकि उसे इस बुराई पर विजय प्राप्त करने की सामर्थ मिल सके।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. अ. क्रूस
ब. हमारा परिवार अथवा मित्र

४. सहज और हल्का

२. स. अपनी इच्छा से बढ़कर परमेश्वर की इच्छा पूरी करना।

५. आपका उत्तर। मुझे आशा है कि अ) और ब) के लिए आपका उत्तर "नहीं" है क्योंकि आपको मित्रों की खातिर चाहे वे अविश्वासी हों या मसीही अपने मसीही विश्वास को नहीं बदलना चाहिए। मुझे आशा है कि स) के लिए आपका उत्तर "हां" है। यीशु जहां कहीं गया उसने गवाही दी — मन्दिरों में या लोगों के घरों में। मुझे विश्वास है कि वह उन सभी जगहों में जाता है जहां लोग उसके वचन को सुनने के भूखे हैं।

३. सभी कथन सही हैं।

६. स. उसके साथ प्रार्थना करें और प्रभु के पास जाएं तथा उसके वचन में से बताएं ताकि उसे इस बुराई पर विजय प्राप्त करने की सामर्थ मिल सके।

आपकी टिप्पणी के लिए